Impact Factor (SJIF): 6.092 E-ISSN: 2583-1615

International Journal of Research in Academic World

Received: 15/February/2023 IJRAW: 2023; 2(3):78-83 Accepted: 12/March/2023

परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन

[*1]अश्विनी कुमार और [2]प्रो0 राजेश कुमार सिंह

[*1]शोध छात्र, शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

[2]आचार्य शिक्षाशास्त्र विभाग, दीनदयाल उपाध्याय, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर, उत्तर प्रदेश, भारत।

सारांश

प्रस्तुत शोध प्रपत्र में परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। सांख्यिकी परिणामों के विश्लेषण के आधार पर निष्कर्ष प्राप्त हुआ है कि परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर में अन्तर है किन्तु ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर में कोई अन्तर नहीं है।

मूल शब्दः परिषदीय, गैर परिषदीय, शैक्षिक स्तर, शिक्षक, शिक्षण प्रभावशीलता

प्रस्तावना

शिक्षण प्रभावशीलता शिक्षक की व्यावसयिक दायित्वों का कर्त्तव्यबोध कराता है। शिक्षार्थी उन्हीं शिक्षकों को अपना आदर्श मानते है जो अपने विषय का ज्ञाता होता है तथा कक्षा–कक्ष में अपने विषय को प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करता हैं। आज जिस प्रकार से मोबाइल, इन्टरनेट आदि ने शिक्षा व्यवस्था को प्रभावित किया है उसमें शिक्षक की भूमिका परिवर्तित होती दीख रही है। ऐसी सम्भावना भी महसूस की जा सकती है कि ये आने वाले समय में शिक्षक की आवश्यकता को चुनौती भी दे सकते हैं। ऐसे समय में शिक्षक की शिक्षण प्रभावशालता को और अधिक प्रभावशाली बनाने की जरुरत महसूस हो रही है।

शोध की आवश्यकता

ऐसा सुनने में आता है कि परिषदीय विद्यालयों के शिक्षक अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठापूर्वक नहीं कर रहे हैं। वहीं गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षक प्रबंधकीय व्यवस्था के मकडजाड़ में फसने के बावजूद भी अपने दायित्वों का निर्वहन पूरी निष्ठा के साथ करते हैं। ये कुछ ऐसे अनुत्तरित प्रश्न थे जिनका उत्तर प्राप्त करने के दृष्टिकोण से शोधकर्ता ने इस प्रकरण को अपने शोध का विषय बनाया है।

समस्या कथन

परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन"

शोध में प्रयुक्त पदों का परिभाषीकरण

1. **उच्च प्राथमिक स्तरः** प्रस्तुत शोध अध्ययन में उच्च प्राथमिक स्तर से तात्पर्य उन विद्यालयों से है जिनमें कक्षा 6 से 8 तक की कक्षायें संचालित होती हैं। अर्थात् जहाँ 11 वर्ष से लेकर 14 वर्ष तक के बालक–बालिकाओं के अध्ययन की व्यवस्था होती है।
2. **परिषदीय विद्यालयः** प्रस्तुत शोध अध्ययन में परिषदीय विद्यालय से तात्पर्य उत्तर प्रदेश बेसिक शिक्षा परिषद् (1972) द्वारा संचालित प्राथमिक (पूर्व प्राथमिक–कक्षा एक से पांच तक एवं उच्च प्राथमिक–कक्षा छः से आठ तक) विद्यालयों से है। जिनका सम्पूर्ण वित्तीय वहन सरकार द्वारा किया जाता है तथा इनका व्यवस्थापन, प्रबन्धन, संचालन व पर्यवेक्षण भी सरकार द्वारा ही नियंत्रित किया जाता है।
3. **गैर परिषदीय विद्यालयः** प्रस्तुत शोध अध्ययन में गैर परिषदीय विद्यालय से तात्पर्य मान्यता प्राप्त वित्तपोषित उच्च स्तरीय (जूनियर हाईस्कूल) विद्यालयों से है, जिनकी मान्यता बेसिक शिक्षा परिषद् द्वारा दी जाती है। इन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों को वेतन तो सरकार द्वारा दी जाती है, लेकिन इनका प्रबन्धन, शैक्षिक प्रशासन, व्यवस्थापन तथा संचालन निजी प्रबन्ध समिति द्वारा किया जाता है। इन्हें एडेड/वित्तपोषित जूनियर हाईस्कूल स्तर के विद्यालय भी कहा जाता है।
4. **शिक्षण प्रभावशीलताः** शिक्षण प्रभावशीलता का अर्थ है, शिक्षक द्वारा कक्षा–कक्ष में ऐसा प्रभावी शिक्षण जिससे विद्यार्थियों के व्यवहार में सकारात्मक परिवर्तन लाया जा सकें। अर्थात् एक शिक्षक अपने अध्यापन कार्य से विद्याार्थियों को किस स्तर तक संतुष्ट कर पाता है, यह उसके शिक्षण प्रभावशीलता को

***Corresponding Author:** अश्विनी कुमार

परिदर्शित करता है। किसी भी शिक्षक की शिक्षण प्रभावशीलता का मापन उसकी शिक्षण प्रक्रिया से प्राप्त विद्यार्थी संतुष्टि स्तर, शिक्षार्थियों की सफलता का स्तर एवं विशिष्ट व शैक्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति के स्तर होते है।

अध्ययन के उद्देश्य

1. परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
2. शहरी क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।
3. ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

अध्ययन की परिकल्पनाएँ

1. परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।
2. शहरी क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।
3. ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर है।

सम्बन्धित साहित्य का अवलोकन

1. कुमार, विवेकानन्द (2019) ने "प्राथमिक स्तर पर कार्यरत टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर टी0ई0टी0 शिक्षकों की प्रभावशीलता का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। अध्ययन के उद्देश्य निम्न थे–पहला प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर टी0ई0टी0 शिक्षकों की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना। दूसरा प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरुष एवं महिला शिक्षकों की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना। तीसरा प्राथमिक स्तर पर गैर टी0ई0टी0 पुरुष एवं महिला शिक्षकों की प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना। परिकल्पना निम्न थे–पहला प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण एवं गैर टी0ई0टी0 शिक्षकों की प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं है। दूसरा प्राथमिक स्तर पर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण पुरुष एवं महिला शिक्षकों की प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं है। तीसरा प्राथमिक स्तर पर गैर टी0ई0टी0 पुरुष एवं महिला शिक्षकों की प्रभावशीलता में सार्थक अंतर नहीं है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। स्तरीकृत यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा देवरिया जनपद के 99 टी0ई0टी0 उत्तीर्ण व 101 गैर टी0ई0टी0 उत्तीर्ण शिक्षकों को न्यादर्श में शामिल किया गया है। शिक्षक प्रभावशीलता ज्ञात करने के लिए शोधकर्ता ने स्वनिर्मित प्रश्नावली मापनी उपकरण का प्रयोग किया है। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, 'टी' मान व प्रसरण विश्लेषण आदि का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि टी0ई0टी0 उत्तीर्ण शिक्षकों की प्रभावशीलता गैर टी0ई0टी0 शिक्षकों की तुलना में अधिक है।
2. यादव, सुमन लता (2019) ने "ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। शोध के उद्देश्य निम्न थे–ग्रामीण तथा शहरी माध्यमिक विद्यालयों में कार्यरत् अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता का अध्ययन करना। परिकल्पना निम्न थे–माध्यमिक विद्यालय के ग्रामीण एवं शहरी अध्यापकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है। अध्ययन में सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। राजस्थान राज्य के जयपुर जिले के माध्यमिक विद्यालयों से 300 शिक्षकों का चयन संयोगजन्य प्रतिचयन न्यादर्श विधि से किया गया है। डॉ0 प्रमोद कुमार व डी0 एन0 मूथा द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत 'शिक्षक प्रभावशीलता मापनी' उपकरण का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, मानक विचलन व टी–मूल्य का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि माध्यमिक स्तर के शहरी व ग्रामीण क्षेत्र के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अन्तर है। शहरी परिवेश के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता ग्रामीण परिवेश के शिक्षकों की अपेक्षा अच्छी है।
3. बहादुर, कमर (2019) ने "माध्यमिक स्तर के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता पर लिंग, वासस्थली एवं शिक्षण विषय के प्रभाव का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। अध्ययन के उद्देश्य निम्न थे–पहला लिंग, वासस्थली एवं शिक्षण विषय का मुख्य प्रभाव शिक्षण प्रभावशीलता पर नहीं पड़ता। दूसरा लिंग, वासस्थली एवं विषय का सम्मिलित प्रभाव शिक्षण प्रभावशीलता पर नहीं पड़ता है। तीसरा लिंग, वासस्थली एवं शिक्षण विषय का अन्तर्क्रियात्मक प्रभाव शिक्षण प्रभावशीलता पर नहीं पड़ता है। परिकल्पना निम्न थे–पहला लिंग, वासस्थली एवं शिक्षण विषय का मुख्य प्रभाव शिक्षण प्रभावशीलता पर नहीं पड़ता है। दूसरा लिंग, वासस्थली एवं शिक्षण विषय का सम्मिलित प्रभाव शिक्षण प्रभावशीलता पर नहीं पड़ता है। तीसरा लिंग, वासस्थली एवं शिक्षण विषय का अन्तर्क्रियात्मक प्रभाव शिक्षण प्रभावशीलता पर नहीं पड़ता है। अध्ययन में एक्स पोस्ट फैक्टो या पश्चोन्मुखी अनुसंधान विधि का प्रयोग किया गया है। जौनपुर जनपद के माध्यमिक विद्यालयों से 100 शिक्षकों का चयन यादृच्छिक न्यादर्श विधि द्वारा किया गया है। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, टी–मान व एनोवा का प्रयोग किया गया है। डॉ0 मनहरनाथ द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत 'शिक्षक प्रभावशीलता मापनी' उपकरण का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष निम्न थे–पहला महिलाओं की अपेक्षा पुरुषों की शिक्षण प्रभावशीलता अधिक होती है। दूसरा ग्रामीण शिक्षकों की अपेक्षा शहरी शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता अधिक होती है। तीसरा कला विषय के शिक्षकों की अपेक्षा विज्ञान विषय के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता अधिक होती है। चौथा शहरी महिला शिक्षिकाओं और ग्रामीण पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में समानता होती है। पांचवाँ कला विषय की शिक्षिकाओं की अपेक्षा विज्ञान विषय पढ़ाने वाले पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता अधिक होती है। छठा विज्ञान विषय पढ़ाने वाले ग्रामीण शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता, कला विषयों को पढ़ाने वाले शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता लगभग समान होती है। सातवाँ कला विषयों को पढ़ाने वाले ग्रामीण पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता तथा विज्ञान विषय पढ़ाने वाली शहरी महिला शिक्षिकाओं की शिक्षण प्रभावशीलता लगभग समान होती है।
4. मिश्रा, ऋषिकेश (2019) ने "हनुमान जिले के सरकारी व निजी माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव का अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। शोध के उद्देश्य निम्न है–माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों के व्यावसायिक तनाव को उनकी शिक्षण कुशलता पर लिंग, विद्यालय प्रकार व स्थानीयता के आधार पर अध्ययन करना। परिकल्पना निम्न थे–माध्यमिक विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक तनाव में लिंग, विद्यालय के प्रकार व स्थानीयता के आधार पर शिक्षण प्रभावशीलता में कोई सार्थक अंतर नहीं है। राजस्थान राज्य के हनुमान जिले के माध्यमिक स्कूल से 100 सरकारी शिक्षक, 100 निजी शिक्षक जिसमें 50 पुरुष व 50 महिला शिक्षकों को यादृच्छिक न्यादर्श विधि से न्यादर्श में शामिल किया गया है। डॉ0 प्रमोद कुमार एवं डी0 एन0 मुथा द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत 'अध्यापक शिक्षण कुशलता मापनी' का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विधियों में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन व टी–मान का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष में पाया गया कि सरकारी व निजी माध्यमिक

विद्यालयों के शिक्षकों की व्यावसायिक तनाव का उनकी शिक्षण प्रभावशीलता पर प्रभाव पडता है।

5. अजय कुमार यादव (2020) ने "वीर बहादुर सिंह पूर्वाचल विश्वविद्यालय, जौनपुर से सम्बद्व महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की कार्य संतुष्टि, सामाजिक पृथक्करण तथा शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन" विषय पर शोध कार्य किया। अध्ययन के उद्देश्य निम्न थे–प्रथम वित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना। दूसरा स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना। तीसरा वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन करना। परिकल्पना निम्न थे–प्रथम वित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है। दूसरा स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत महिला व पुरुष शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है। तीसरा वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में सार्थक अन्तर नहीं है। अध्ययन में वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया गया है। उ0प्र0 के जौनपुर जिले से 200 शिक्षकों (100 वित्तपोषित व 100 स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षक) को यादृच्छिक न्यादर्श विधि से न्यादर्श में शामिल किया गया है। डॉ0 प्रमोद कुमार व डी0 एन0 मुथा द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत 'शिक्षक प्रभावशीलता मापनी' उपकरण का प्रयोग किया गया है। सांख्यिकीय विधियों में प्रतिशत, प्रतिशतांक, विषमता व वक्रता के गुणांक शापरों विल्क परीक्षण, मध्यमान, मानक विचलन व क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है। निष्कर्ष निम्न थे–वित्तपोषित एवं स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में अन्तर है। वित्तपोषित महाविद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता स्ववित्तपोषित महाविद्यालयों के शिक्षकों की तुलना में अधिक संतोषजनक है।

शोध विधि

प्रस्तुत शोध कार्य में शोधकर्ता ने वर्णनात्मक अनुसंधान के अन्तर्गत आने वाली सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया है। सर्वेक्षण शोध विधि वह विधि है जिसमें वर्तमान की स्थिति क्या है इसका वर्णन करता है और भविष्य की प्रत्याशाओं की ओर संकेत देता है।

जनसंख्या

उत्तर प्रदेश के कुल 18 मण्डलों में स्थित परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों को जनसंख्या में शामिल किया गया है।

न्यादर्श का चयन

प्रस्तुत शोध अध्ययन में 18 मण्डलों के सभी परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों से शोध प्रदत्तों (डाटा) को संकलन करना कठिन व श्रमजन्य प्रतीत हो रहा है। यह समय व धन की दृष्टिकोण से भी कठिन है। अतः शोधकर्ता ने न्यादर्श का प्रयोग करके 18 मण्डलों में से केवल एक मण्डल गोरखपुर मण्डल का चयन किया है। गोरखपुर मण्डल के चार शैक्षिक जिलों गोरखपुर, महराजगंज, देवरिया व कुशीनगर में स्थित परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों का चयन लाटरी विधि से किया गया है। इन विद्यालयों में कार्यरत शिक्षकों का चयन आकस्मिक चयन विधि से किया गया है, जिसमें परिषदीय विद्यालयों से 800 शिक्षकों को और गैर परिषदीय विद्यालयों से 800 शिक्षकों को अर्थात् कुल 1600 शिक्षकों को न्यादर्श में शामिल किया गया है।

उपकरण

इस शोध कार्य में शोधकर्ता ने शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता चर को ज्ञात करने हेतु डॉ0 सुभाष सरकार व अभिजीत देव द्वारा निर्मित व प्रमापीकृत 'शिक्षण प्रभावशीलता प्रश्नावली मापनी' का प्रयोग किया है। इस मापनी में चार घटक है–तैयारी, प्रदर्शन, आवेदन और प्रबन्धन।

सांख्यिकी प्राविधियाँ

सांख्यिकी विधियों में मध्यमान, मानक विचलन, और क्रान्तिक अनुपात का प्रयोग किया गया है।

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता ज्ञात करने के लिए मापनी का प्रयोग कर प्रदत्तों का संकलन करके सांख्यिकी गणना द्वारा व्याख्या किया गया है।

प्रस्तुत शोध में संकलित प्रदत्तों से निर्धारित उद्देश्य के अनुसार परिकल्पनाओं का परीक्षण क्रमानुसार नीचे की तालिकाओं में किया गया है। समूहों के मध्यमानों के अन्तर की सार्थकता का जांच के लिए प्रदत्तों का मध्यमान, मानक विचलन की गणना करते हुए तुलना हेतु क्रान्तिक अनुपात विधि का प्रयोग किया गया है। अन्तर की सार्थकता की जांच सार्थकता के 0.05 एवं 0.01 स्तर पर की गयी है। परिकल्पनाओं के अनुसार आंकड़ों का विश्लेषण नीचे की पंक्तियों में किया गया है।

परिकल्पना 1: परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर का अध्ययन क्रान्तिक अनुपात के आधार पर किया गया है।

तालिका 1: परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर

$H_0: M_1 = M_2$

$H_1: M_1 \neq M_2$

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
01	परिषदीय शिक्षक	800	$M_1 = 177$	10.37	11.54*
02	गैर परिषदीय शिक्षक	800	$M_2 = 171$	10.40	

*सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर मान सार्थक

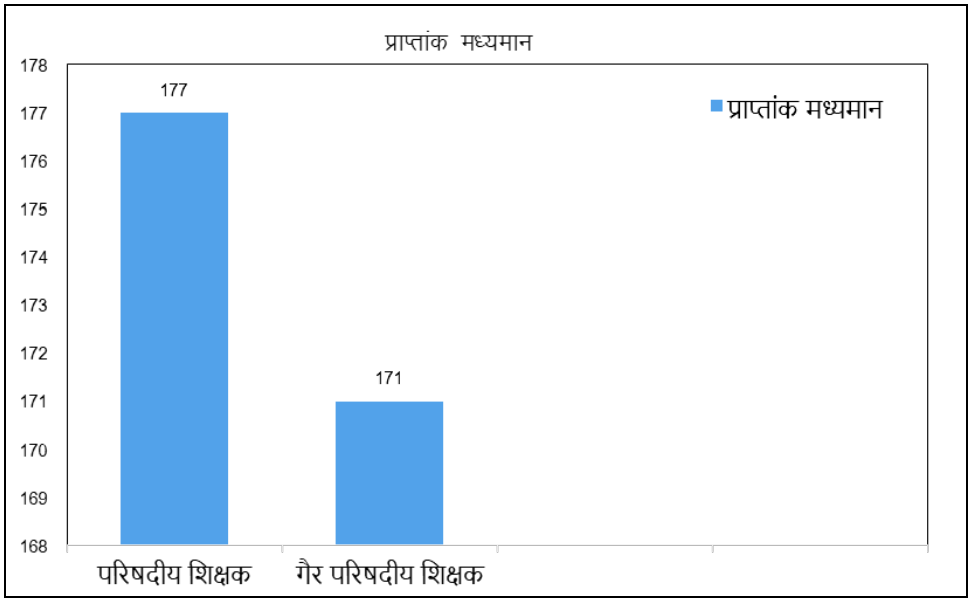

आरेख 1: परिषदीय तथा गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि क्रान्तिक अनुपात का मान 11.54 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के 0.01 स्तर के क्रान्तिक मान 2.56 से अधिक है। अतः सार्थकता के इस स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुई है तथा शोध परिकल्पना स्वीकार हुई है। इस अध्ययन में परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 177 प्राप्त हुआ है, जबकि गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 171 प्राप्त हुआ है। इस स्थिति में परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अच्छी है। अतः यह कहा जा सकता है कि परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों से उच्च स्तर की है।

परिकल्पना 2: शहरी क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर का अध्ययन क्रान्तिक अनुपात के आधार पर किया गया है।

तालिका 2: शहरी क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर

$H_0 : M_3 = M_4$

$H_1 : M_3 \neq M_4$

क्र0सं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
01	परिषदीय	400	$M_3 = 181$	7.55	17.46*
02	गैर परिषदीय	400	$M_4 = 170$	10.02	

*सार्थकता के स्तर 0.01 स्तर पर मान सार्थक

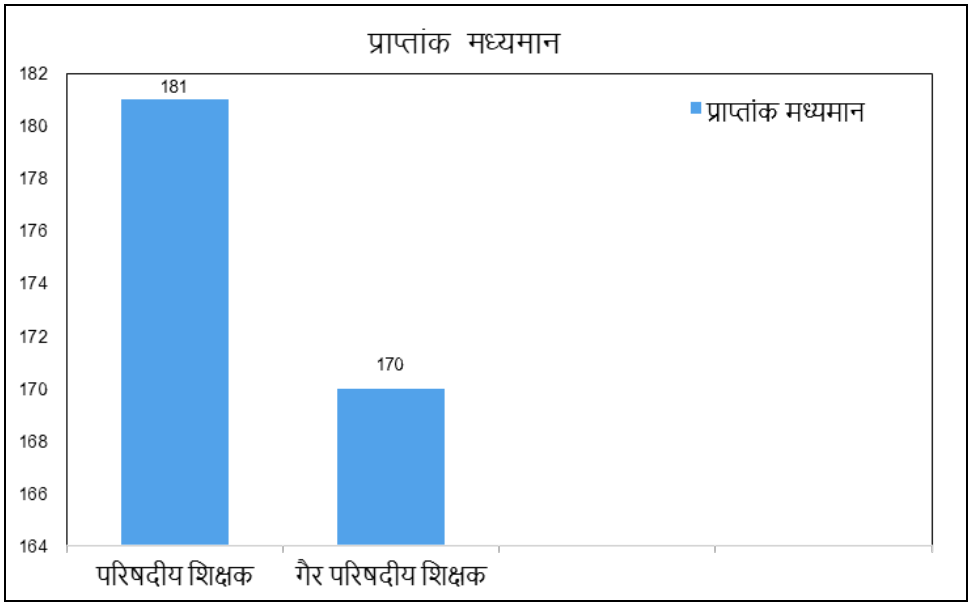

आरेख 2: शहरी क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि क्रान्तिक अनुपात का मान 17.46 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के 0.01 स्तर के क्रान्तिक मान 2.56 से अधिक है। अतः सार्थकता के इस स्तर पर शून्य परिकल्पना अस्वीकार हुई है तथा शोध परिकल्पना स्वीकृत हुई है। इस अध्ययन में शहरी क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 181 प्राप्त हुआ है, जबकि शहरी क्षेत्र के गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 170 प्राप्त हुआ है। इस स्थिति में शहरी क्षेत्र के

परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर शहरी क्षेत्र के गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अच्छी है। अतः यह कहा जा सकता है कि शहरी क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर शहरी क्षेत्र के गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों से उच्च स्तर की है।

परिकल्पना 3: ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर का अध्ययन क्रान्तिक अनुपात के आधार पर किया गया है।

तालिका 3: ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर

$H_0 : M_5 = M_6$

$H_1 : M_5 \neq M_6$

क्र0यं0	समूह	संख्या	मध्यमान	मानक विचलन	क्रान्तिक अनुपात
01	परिषदीय	400	$M_5 = 173$	11.10	1.30*
02	गैर परिषदीय	400	$M_6 = 172$	10.71	

*सार्थकता के स्तर 0.05 स्तर पर मान सार्थक नहीं

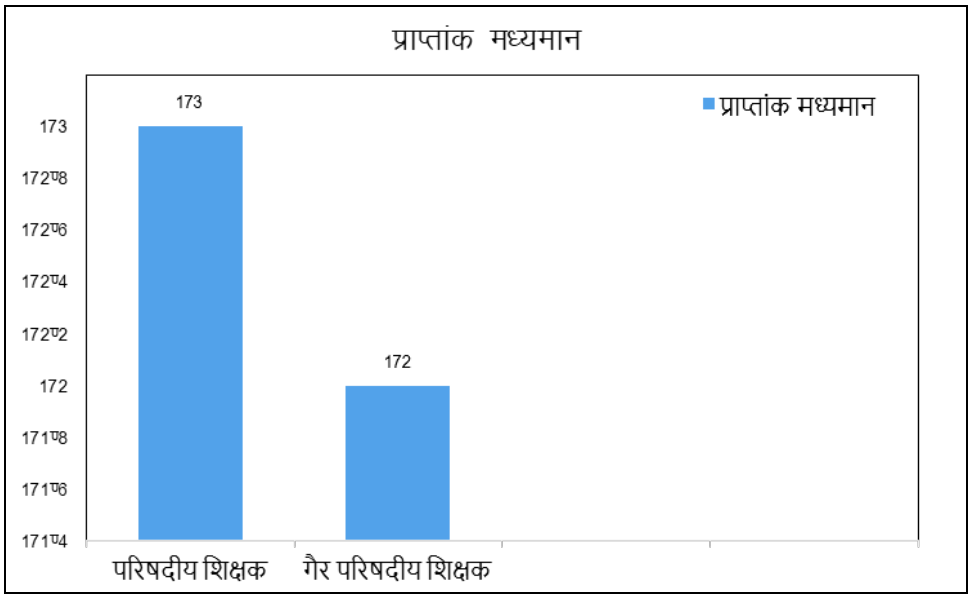

आरेख 3: ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता

उपर्युक्त तालिका से स्पष्ट होता है कि क्रान्तिक अनुपात का मान 1.30 प्राप्त हुआ है, जो कि सार्थकता के 0.05 स्तर के क्रान्तिक मान 1.96 से कम है। अतः इस स्तर पर शून्य परिकल्पना स्वीकार हुई है तथा शोध परिकल्पना अस्वीकार हुई है। इस अध्ययन में ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 173 प्राप्त हुआ है, जबकि ग्रामीण क्षेत्र के गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का मध्यमान 172 प्राप्त हुआ है। ऐसी स्थिति में कहा जा सकता है ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर तथा ग्रामीण क्षेत्र के गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर में कोई अन्तर नहीं है।

निष्कर्ष

प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण के पश्चात् ज्ञात होता है कि तालिका संख्या 01 में परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है, जिसमें शोध की परिकल्पना को स्वीकृत किया गया है। परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों की अपेक्षा अधिक है। इसका कारण यह हो सकता है कि परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों को मिलने वाली अनेक प्रकार की शैक्षिक सुख सुविधाएँ हो सकती हैं।

तालिका संख्या 02 में शहरी क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। इसमें शोध की परिकल्पना को स्वीकार किया गया है। इसका कारण शहरी क्षेत्र के परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शहरी जीवन शैली हो सकती है।

तालिका संख्या 03 में ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक स्तर के विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का तुलनात्मक अध्ययन किया गया है। जिसमें शून्य परिकल्पना को स्वीकृत किया गया है और शोध परिकल्पना को अस्वीकार कर दिया गया है। ऐसी स्थिति में कहा जा सकता है ग्रामीण क्षेत्र के परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता का स्तर और ग्रामीण क्षेत्र के गैर परिषदीय विद्यालयों के शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता के स्तर में कोई अन्तर नहीं है। इसका कारण दोनों में एक समान की कार्य शैली तथा ग्रामीण परिवेश की संकुचत सुविधाएँ हो सकती है।

शैक्षिक उपयोगिता

वर्तमान समय में समय का चक्र जिस गति से चल रहा है उससे भी तीव्र गति से संस्कृति एवं सभ्यता में परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहा है, जिसका प्रभाव शिक्षा के शैक्षिक स्तर में गिरावट के रुप में देखने को मिल रहा है। इस गिरावट के कारणों में न केवल शिक्षार्थी अपितु शिक्षक को अधिक दोषी माना जा रहा है। जो अपने व्यावसायिक कर्त्तयों के प्रति सजग नहीं दीख रहे हैं। शिक्षक के कक्षा–कक्ष में होने वाली गतिविधियों का प्रभाव उनके शिक्षण प्रभावशीलता के मूल्यों में प्रदशित होता है।

प्रस्तुत शोध कार्य के परिणाम न केवल परिषदीय तथा गैर परिषदीय उच्च प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के शैक्षिक समस्याओं के समाधान में मार्गदर्शन का कार्य करेगा अपितु उच्च कक्षाओं के शिक्षण में भी किंचित सुधार किया जा सकता है। वर्तमान में शहरी विद्यालयों के साथ ही ग्रामीण विद्यालयों के शिक्षकों में भी अपने शिक्षण के प्रति जागरुकता का भाव दिखायी दे रहा है। इसका कारण यह हो सकता है कि ग्रामीण विद्यालयों में भी शहरी विद्यालयों के भाँति वे सारी शैक्षिक सुविधाएँ प्राप्त हो रही

है जो शहरी क्षेत्र के विद्यालयों को दी जाती है, जिसका प्रभाव शिक्षकों की शिक्षण प्रभावशीलता में देखने को मिल रही है।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. गुप्ता, एस0पी0 (2020): "अनुसंधान संदर्शिका सम्प्रत्यय, कार्यविधि एवं प्रविधि", शारदा पुस्तक भवन प्रयागराज।
2. गुड, कार्टर वी0, ए0एस0 बार एण्ड डगलस ई0 स्केट्स : "मैथोलाजी ऑफ एजूकेशन रिसर्च", न्यूयार्क, एपिलटन सैंचुरी क्राफ्टस (इंक)।
3. शर्मा, आर0 ए0 (2005): "शिक्षा अनुसंधान के मूल तत्त्व एवं शोध प्रक्रिया", आर0 लाल बुक डिपो, मेरठ।
4. जंगीरा, एन0 के0 (1995): "प्रभावशाली शिक्षण बालकेन्द्रित अवधारणा", नई दिल्ली, नेशलन पब्लिकेशन हाउस।
5. पाण्डेय, डॉ0 श्रीधर (2005): "शिक्षा में मापन, मूल्यांकन एवं प्रारम्भिक सांख्यिकी", भवदीय प्रकाशन अयाध्या–फैजाबाद।
6. दास, आर0सी0 (1995): "शिक्षण प्रभावशीलता", नई दिल्ली, नेशनल पब्लिकेशन हाउस।
7. जार्ज, जे0 मोले (1963): "द साइन्स ऑफ एजूकेशनल रिसर्च", नई दिल्ली, यूरेशिया पब्लिशिंग हाउस प्रा0 लि0 फर्स्ट इण्डियन रिप्रिन्ट।
8. कपिल, एच0 के0 (2006): "अनुसंधान विधियाँ, एच0 पी0 भार्गव बुक हाउस, आगरा।
9. Townsend JC. (1953): Introduction Experimental Methods (Mc Graw Hill).
10. Kerlinger FN: Foundation of Behavioural Research (Holt).
11. Edward A. L. (1959): Quoted in Social Psychology by G. Lindzey (Addition Wesley).
12. www.Sodhganga.Com ¼Internet ½